अखण्डमाखण्डलतुल्यधामभिश्चिरं धृता भूपतिभि: स्ववंशजै:।

त्वयात्महस्तेन मही मदच्युता मतङ्गजेन स्रगिवापवर्जिता ॥२९॥

अन्वय-

आखण्डलतुल्यधामभि: स्ववंशजै: भूपतिभि: अखण्डम् धृता मही त्वया मदच्युता मतङ्गजेन स्रक् इव आत्महस्तेन अपवर्जिता ॥२९॥

अर्थ-

इन्द्र के समान पराक्रमशाली अपने वंश में उत्पन्न होनेवाले भरत आदि राजाओं द्वारा चिर काल तक सम्पूर्ण रूप से धारण की हुई इस धरती की तुमने मद चुवाने वाले (मदोन्मत्त) गजराज द्वारा माला की भाँति अपने ही हाथों से (तोड़फोड़कर) त्याग दिया है ॥२९॥

टिप्पणी-

भरत आदि पूर्ववंशजो के महान् पराक्रम को याद दिलाकर द्रौपदी युधिष्ठिर को लज्जित करना चाहती है। वहाँ वे लोग और वहाँ हो तुम कि इतने बड़े साम्राज्य को अपने ही हाथो से नष्ट पर दिया। अपने ही अवगुण से यह अनर्थ हुआ है। यहाँ उपमा अलंकार है।

व्रजन्ति ते मूढधिय: पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिन:।

प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृताङ्गान्निशिता इवेषव: ॥३०॥

अन्वय-

ये मायाविषु मायिन: न भवन्ति ते मूढधिय: पराभवं व्रजन्ति। शठा: तथाविधान् असंवृताङ्गान् निशिता इव प्रविश्य घ्नन्ति ॥३०॥

अर्थ-

जो कपट करनेवालों के प्रति कपटाचारी नहीं बनते वे मंदबुद्धिवाले लोग पराजित होते हैं। अपने अंगों को सुरक्षित न रखने वाले वैसे लोगों में प्रवेश कर (आत्मीय बनकर) धूर्त्त उन्हें उसी प्रकार मार देते हैं जैसे तीक्ष्ण बाण कवचादि से अरक्षित अंगों वाले लोगों के भीतर घुसकर उन्हें मार डालते हैं ॥३०॥

टिप्पणी-

तात्पर्य यह है कि मायावी दुर्योधन को जीतने के लिए तुम को अपनी यह धर्मात्मा होने की नीति छोड़नी होगी । तुम्हे भी उसी की तरह मायावी बनना होगा जिस तरह अरक्षित शरीर में तीक्ष्ण बाण घुस कर अंगों का नाश कर देते हैं, उसी तरह से निष्कपट रहनेवालो के बीच में उसके कपटी शत्रु भी प्रवेश कर लेते है और उसका सत्यानाश कर देते हैं।

यहाँ अर्थान्तरन्यास से अनुप्राणित उपमा अलङ्कार है।